पेशगी

हेनरी लोपेज (1937)

अफ्रीकी देश कांगो में जन्मे हेनरी लोपेज हमारे समय के अत्यंत समर्थ लेखक हैं । वे कांगो के शिक्षा मंत्री, वित्त मंत्री एवं प्रधानमंत्री रह चुके हैं । वर्तमान में वे यूनेस्को में संस्कृति और संचार विभाग के महानिदेशक हैं । अतिव्यस्त दिनचर्या एवं सक्रिय राजनीतिक जीवन के साथ-साथ लोपेज ने अपने लेखकीय कर्म को भी उतनी ही गंभीरता से निभाया है । उनका लेखन विकसित या विकासशील दुनिया तथा अविकसित अफ्रीका के बीच की दूरी को दिखाता है । इस तरह उनका लेखन न केवल अफ्रीका बल्कि दुनिया की वृहत्तर आबादी, उसके जीवन और उसकी पीड़ा का रचनात्मक साक्ष्य बनकर प्रस्तुत होता है ।

"अच्छा नहीं है", छोटी बच्ची ने मुँह बिचकाते हुए कहा ।

"हाँ है, फ्रैंक्वा, देखो ।" यह कहते हुए कारमेन ने खुद संतरे का एक चीरा मुँह में डाल लिया । फिर उसने आँखें मूँद लीं । छोटी लड़की उसे स्थिर भाव से देखती रही ।

"पूरा खा लो ।"

कारमेन ने उसे संतरे का चौथाई भाग दे दिया । ऐसा लगा जैसे पुरोहित अपने जजमान को अर्पित कर रहा हो । लेकिन छोटी बच्ची ने गुस्से से अपना मुँह फेर लिया । अब तक सात बज चुके थे । कारमेन को काम निपटाने की जल्दी थी क्योंकि वह मालकिन से अब तक नहीं पूछ पाई थी ....

वह अधिक तेज आवाज में बोलने लगी और कठोर दिखने लगी ।

"फ्रैंक्वा ! अब खाती हो या तुम्हारी माँ से जाकर बताऊँ ।" पर बच्ची ने एक नहीं माना ।

घर की मालकिन अपने पति के साथ बैठक में थी । वह ब्रिज खेलने के लिए आमंत्रित मित्रों का मनोरंजन कर रही थी । वह पहले ही कई बार कारमेन को मना कर चुकी थी कि जब वह 'अपनी कंपनी' में होती है, तो उसे तंग नहीं करे । ऐसे में कारमेन भला यह साहस जुटा पाती कि उन लोगों की मौज-मस्ती में खलल डाले ! उसे फटकार सुनने का डर नहीं था । वह मानती थी कि लोग ऊँची आवाज में बोलकर खुद का तनाव दूर करते हैं । और चौकीदार फर्डिनांड के अनुसार, चूँकि मैडम का पति उसे पीटता था,

वह अपना गुस्सा नौकरों पर उतारती थी । इसमें नाराजगी क्यों ? शांतचित्त से इसे स्वीकार करना ही कहीं बेहतर था । लेकिन अपरिचितों एवं अन्य लोगों के सामने डाँट सुनना, थप्पड़ खाने से भी ज्यादा बुरा था। इसलिए कारमेन ने रुकना मुनासिब समझा ।

और फिर, मैडम को एक बुरी आदत थी । वह बच्ची के साथ इस तरह बात करती मानो वह वयस्क हो ।

"फ्रैंक्वा, मेरी प्यारी बच्ची, तुमने आज खाने में क्या लिया ?" और छोटी फ्रैंक्वा एक-एक कर सुनाती । उसे यह बताने में मजा आता कि उसने तो 'डेजर्ट' में कुछ लिया ही नहीं क्योंकि जो संतरे कारमेन ने दिए थे वे सड़े थे । और मैडम इस बात के लिए कारमेन को डाँटती कि उसे बताया क्यों नहीं । वह भी खासकर तब जबकि उसने पहले ही चेतावनी दे रखी थी कि 'डेजर्ट' के बिना बच्चों का आहार पूर्णतया संतुलित नहीं होता, आदि-आदि । आमतौर पर कारमेन इन सब बातों को गंभीरता से सुन लेती । उसके गाँव एवं पूरे माकेलेकेले में सिर्फ इस बात की अहमियत थी कि बच्चे का पेट भर जाए और वह भूखा नहीं रहे । इसके अतिरिक्त यदि उन्हें संतुलित आहार की चिंता होती तो उसका कभी अंत नहीं होता । पर, कारमेन को हरगिज भूलना नहीं चाहिए कि वह मालकिन से नहीं पूछ पाई थी....

उसके सामने सिर्फ एक चारा था । वही करना जो उसे खिलाने के लिए उसकी माँ करती थी । सो एक हाथ से उसने बच्ची का मुँह खोला और दूसरे से फल का वह टुकड़ा उसमें ठूँस दिया । फ्रैंक्वा चीख पड़ी । इसका अंदाजा तो था ही । वह चिल्लाती रही, गुस्से से उसका गला बैठ गया । गलियारे में टाइल से बने फर्श पर धम-धम हथौड़े पीटने सी आवाज आ रही थी । यह आवाज मैडम के कदमों की थी जो दौड़ी चली आई । कारमेन की जीत हुई ।

"यहाँ क्या हो रहा है ?"

"मैडम वह नहीं खाना चाहती है ।"

"ओह जबरदस्ती नहीं करो, बेचारी छोटी सी बच्ची । उसके लिए रेफ्रिजरेटर से कुछ अंगूर ला दो । उसे अंगूर पसंद है ।"

मैडम ने छोटी बच्ची के सिर पर प्यार से हाथ फेरा और उसे कई बार चूम लिया । कारमेन यूरोपियन तरीके की डेजर्ट लेने चली गई । जब वह वापस आ रही थी तो मैडम से उसकी मुलाकात हॉल में हो गई, वहाँ उसने मन की बात छेड़ ही दी । पर उसे लगा कि यह बहुत उचित अवसर नहीं था ।

फ्रैंक्वा मजे में अंगूर खा गई । अंगूर निश्चय ही अच्छे रहे होंगे, क्योंकि यह बातूनी लड़की, चुपचाप शांत होकर उन्हें खा रही थी । उनका स्वाद जानने के लिए एक दिन कारमेन को कुछ अंगूर चुराकर रखने ही होंगे ।

छोटी लड़की खाने में व्यस्त रही । और इस बीच कारमेन ने अपने गालों पर लुढ़क आए आँसुओं को पोंछ लिया । उसके दिल में इस बच्ची के लिए ममता भरी थी । कारमेन उसके साथ तब से थी जब वह सिर्फ दो महीने की थी । व्यवहारतः उसने ही तो बच्ची को पाला था । फ्रैंक्वा मैडम की बेटी थी, तो उसकी भी । यहाँ तक कि यदि वह काम छोड़ भी दे या मैडम उसकी छुट्टी भी कर दे तो भी समय-समय पर आकर फ्रैंक्वा को बड़ी होते देखने से वह खुद को नहीं रोक पाएगी ।

कारमेन उस पर आना-दो आना तक खर्च कर आई । फिर उसके कपड़े बदले और बिस्तर पर लिटा दिया । तब तक साढ़े सात बज चुके थे । रात हो चुकी थी, माकेलेकेले पहुँचने के लिए उसे अब भी एक घंटा चलना पड़ेगा । लेकिन फ्रैंक्वा नहीं चाहती थी कि उसकी आया उसे छोड़कर जाए । वह झुँझला देनेवाली अपनी जिद्दी आदत पर अड़ी रही । वह चाहती थी कि कारमेन उसे एक लोरी सुनाकर सुला दे ।

सो जा बच्ची सो जा
सो जा बच्ची सो जा...

इसके बाद उसे दूसरा गाना होता । वैसे तो दूसरी लोरी सुनते-सुनते बच्ची सो जाती पर उस शाम तीन गानी पड़ीं । कारमेन गाती रही पर उसका ध्यान कहीं और था । वह फ्रैंक्वा के बारे में सोचती रही, जिसे वह अपनी संतान की तरह ही प्यार करती थी । वे दोनों एक ही उम्र के थे, पर कितने भिन्न । फ्रैंक्वा एकदम निडर थी । वह बेहिचक बड़े-बुजुर्गों के साथ बात करती । नौकरों पर हुक्म चलाती । और अभी से कपड़े पसंद करने में नाक-भौं सिकोड़ती । पर उसके बेटे हेक्टर की बोली नहीं फूटती । वह लजालु था, पर अजनबियों से दूर रहता । अभी से उसकी आँखों में उदासी छाई थी । फिर भी दोनों बच्चे एक ही पीढ़ी के थे । एक ही भाषा बोलते । पर क्या वे एक दूसरे को समझ पाएँगे । कारमेन यह सब ईर्ष्यावश नहीं सोचती । पर वह इतना जरूर चाहती थी कि हेक्टर की 'अच्छी परवरिश' हो । लेकिन यह कैसे संभव हो ? समाज और मानव स्वभाव दोनों को बदलना होगा ।

उस दिन काम पर जाने का उसका जरा भी दिल नहीं था । पूरी रात बेचारा छोटा सा बच्चा रोता रहा । उसके पेट में दर्द था । उसे दस्त लगा था, कम से कम तीन बार उल्टी आई थी । पहली बार तो उसे कुछ आराम मिला था । लेकिन अंतिम बार पेट में मरोड़ पड़ता रहा, पर कुछ भी बाहर नहीं आया । बच्चे का दर्द एकदम झलक रहा था । उसे साँस लेने में कठिनाई हो रही थी और माथे पर पसीना आ गया था । वह तो बिलकुल घबरा गई । पहले ही वह अपने दो बच्चों को खो चुकी थी । बदहवासी में उसने उसी माहौल में सोई अपनी माँ को जगा ही दिया होता पर उसने खुद को सँभाला । उसे डर था कि माँ समय गँवाए बिना उसे ओझा के पास ले जाएगी, जैसा कि पहले दोनों बच्चों के साथ हो चुका था । और वे मर गए थे । फिर भी हर बार उसे अपनी आमदनी के बराबर 'चढ़ावा' देना पड़ा था । और उनकी मौत के बाद स्थिति तो बदतर हो गई थी । तांत्रिक ने तो बच्चों की मृत्यु का कारण उसे ही घोषित कर दिया । अपने माता-पिता द्वारा चुने गए वर से शादी करने से वह पाँच वर्षों तक इनकार करती रही थी । इतना ही नहीं उसे एक के बाद एक आती बूढ़ियों का बकवास भी झेलना पड़ता, मानो बच्चों की मौत का गम कुछ कम हो । वे उसी बात को बार-बार दुहरातीं और अपनी बात मनवाने के लिए दबाव देतीं । वे उस पर दबाव डालती कि या तो भगवान, पूर्वज, आत्माओं की मर्जी को स्वीकार करे या फिर बेचारे बच्चों की नियति । उसे किटोंगा फ्लेवियन से शादी कर लेनी चाहिए । उसके बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा । क्या 'वह' एक अच्छा सौदा नहीं था ? सरकारी ड्राइवर की ड्यूटी के बाद वह खुद अपना मालिक था । क्वेंज इंडोचाइना में उसकी चार टैक्सियाँ चलती थीं । एक दुकान एवं एक 'बार' भी थे । किटोंगा उसका भार उठा लेगा । उसे और काम करने की जरूरत नहीं पड़ेगी । पर, हाँ उसे पहले से ही दो बीवियाँ थीं । उनमें से एक बेकांगो में थी तो दूसरी क्वेंज में 'बार' चलाती थी ।

वह यह सब सोच ही रही थी कि इतने में उसके बेटे ने बुलाया । वह उसकी चटाई पर सोना चाहता था । उसे अकेले में डर लगता था । क्या वह सुबह तक बचेगा ? कुछ बच्चे बीमार पड़ते हैं तो उनके माता-पिता तुरंत फोन उठाकर नंबर ड़ायल करते हैं तथा सीधे डॉक्टर के पास पहुँच जाते हैं । डॉक्टर वह सब करता है जो आवश्यक होता है या उन्हें भरोसा दिलाता है । पर गरीब लोग नहीं । सबसे नजदीक वाले दवाखाने रात में बंद रहते हैं । और अस्पताल में जिस नर्स से पाला पड़ता है, वह बदमिजाज होती है । वह हंगामा कर देती है, क्योंकि लोग उसे नींद से उठाने की जुर्रत करते हैं । जहाँ तक किसी डॉक्टर के पास जाने का सवाल है–शहर के अच्छे भाग में रहनेवाले लोग रात में किसी ऐरे-गैरे के लिए दरवाजा भी तो नहीं खोलते । और फिर, वह ख्याली पुलाव ही तो पका रही है । किसी प्राइवेट डॉक्टर से दिखलाने में पैसे भी तो लगते हैं ।

आखिरकार सुबह होते-होते बच्चा सो गया । जहाँ तक कारमेन का सवाल था, उसे उठकर काम पर जाना था । उसे प्रतिदिन माकेलेकेले से मिपला तक दो घंटे अवश्य चलना पड़ता । चूँकि उसकी मालकिन उसे साढ़े सात से पहले पहुँचने को कहती, समय का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता...

थकान के कारण वह बिस्तर में लेटे रहना नहीं चाहती थी । उस सुबह वह काम पर जाना भी तो नहीं चाहती थी । उसे अच्छा लगता यदि वह अस्पताल जाकर यह पता करती कि हेक्टर को दरअसल बीमारी क्या है । जब भी वह बीमार पड़ता, कारमेन उसे अकेले नहीं छोड़ना चाहती । उसका दिल बेचैन हो जाता । एक बार जब उसे वह काम पर ले गई तो मैडम ने साफ शब्दों में कह दिया कि उसे अपने बेटे को नहीं बल्कि फ्रैंक्वा की देखभाल के लिए पैसा मिलता है । कारमेन को पता था कि उसकी माँ एवं अन्य महिला रिश्तेदार हेक्टर को डॉक्टर के पास ले जाएँगे । उसका कबीलाई परिवार बड़ा है, जहाँ किसी भी हाल में एक बच्चा कभी अकेला नहीं रहता है । पर फिर भी वह मानती थी कि बच्चों की सबसे अच्छी परवरिश उसकी माँ के द्वारा होती है । जिसे हमने जन्म दिया है, बीमारी की दशा में उसे ही हमारी सबसे अधिक आवश्यकता होती है ।

लेकिन उसने यदि अपना पूरा दिन बेटे को दे दिया होता तो काम से उसकी छुट्टी कर दी जाती । तब वे क्या करती ? पहले ही वह उस महीने में दो बार छुट्टी कर चुकी थी । पहली बार वह सही में बीमार पड़ गई थी तथा बुखार में तपते हुए दो दिन चटाई पर गुजारे थे । दूसरी छुट्टी एक शवयात्रा के लिए थी । मैडम बहुत गुस्सा हुई थीं, "कारमेन, मैं पहले ही बहुत झेल चुकी हूँ ! मुझे जब भी जरूरत होती है, तुम गायब हो जाती हो । ऐसा लगता है, मानो जान-बूझकर ऐसा करती हो । तुम उन्हीं दिनों घर बैठना पसंद करती हो जब मेरी योजनाएँ तय होती हैं । मेरी प्यारी देवीजी, अब मैं तुम्हें चेतावनी देती हूँ । तुमने इस महीने में यदि अब एक दिन भी छुट्टी की तो तुम्हें कहीं और काम ढूँढ़ना होगा ।"

वह कैसे समझाए ? कारमेन ने तो पूरी कोशिश की । पर गोरे लोग...ये तो समझते हैं कि हम जब भी काम पर नहीं आते तो उसकी वजह होती है आलस ।

हेक्टर के इतने बीमार होने के बावजूद वह आज काम पर आई । दोपहर में उसकी बहन ने कहलवा भेजा कि डॉक्टर ने कुछ दवाइयाँ लिखी हैं । हमेशा की तरह फिर वही बात--वह पैसे कहाँ से देगी ? पर हेक्टर का ठीक होना जरूरी है ।

और उस शाम कारमेन उस छोटी सी लड़की के लिए गा रही थी जिसके पास सब कुछ था ।

उसके माता-पिता 'जेंटिलमैन' एंव 'लेडिज' के साथ ताश खेलने में मशगूल थे ।

फ्रैंक्वा के सो जाने के बाद कारमेन रसोई में चली गई । मेहमानों की ब्रिज का खेल खत्म होने तक उसे प्रतीक्षा करनी थी । वह बूढ़े चौकीदार फर्डिनांड के साथ बात कर समय बिताने लगी । उसे ऐसा करना सामान्यतया अच्छा लगता था । इससे उसका दिल हल्का हो जाता तथा चिंता कुछ कम हो जाती । वे अपने मालिकों की खामियाँ एक दूसरे को सुनाते । फर्डिनांड आम तौर पर आँखों देखी सुनाते वक्त मालिकों की नकल भी उतारता । कारमेन खूब हँसती । पर उस शाम वह गुमसुम रही और फर्डिनांड ने उसे इस पर टोका भी था ।

मैडम आखिरकार रसोई में आई ।

"कारमेन, तुम अभी तक गई नहीं ?"

यह सबसे कठिन घड़ी थी, "मैडम मुझे कुछ रुपए चाहिए ।"

"क्यों, रुपए तो मैंने दस दिन पहले ही दे दिए थे ।"

"मेरा बेटा बीमार है । उसे दवाई चाहिए ।"

"लो जरा इनकी बात सुनो ! तो अब मैं जनकल्याण कोष बन गई हूँ । इनके पति नहीं हैं, पर बच्चे हैं । उन बच्चों की देखभाल तो करती नहीं !"

"मैडम गोरे लोगों का मानना है..."

"तो तुम्हारा बच्चा बीमार है ? होगा ही, तुम मेरी बात जो नहीं सुनती । मैंने तुम्हें बार-बार कहा है कि उसे सही ढंग से जरूर खिलाओ । तुमने कभी ऐसा किया ?"

"नहीं मैडम ।"

"नहीं बिलकुल नहीं । तुम्हारे सड़े पुराने 'मेनियक' से उसका पेट भरना आसान जो है ।"

कारमेन क्या जवाब देती ? यह कहती कि मैडम द्वारा बनाया गया आहार देने का उसने प्रयास तो किया था परंतु मैडम को इस बात का एहसास ही नहीं था कि कारमेन के मासिक तनख्वाह का तीन गुणा वह अपने पति, बच्ची, स्वयं एवं अपनी बिल्ली को सिर्फ एक सप्ताह खिलाने पर खर्च करती है । यदि वह मैडम को यह बात कहती तो बदतमीजी के लिए उसे काम से हाथ धोना पड़ता ।

"पर जो कुछ भी हो, शाम के इस वक्त मेरे पास पैसे बिलकुल नहीं हैं । तुम जंगली लोग कब यह समझोगे कि पैसा पेड़ पर नहीं उगता । तुम रुपयों का अलग-अलग मद बनाकर उन्हें बचाना कब सीखोगी ?"

और मैडम देर तक इसी तरह बोलती रही । कारमेन उसकी सब बात नहीं समझ पाई । दरअसल जब कोई तेजी से फ्रेंच बोलता है, तब मन ही मन अनुवाद करने के लिए उसे पर्याप्त समय नहीं मिल पाता है । और वह तालमेल नहीं रख पाती, केवल सिर हिलाए जाती है । इस बार भी उसने वही किया । शायद इसी से मैडम कुछ नरम पड़ीं ? जो भी हो, उसने कारमेन के कुछ ऐस्पिरिन दी और अगले दिन 500 फ्रैंक देने का वादा किया ।

आखिरकार बेचारी कारमेन वहाँ से चल पड़ी । माकेलेकेले तक का पूरा सफर उसने पैदल तय किया । माकेलेकेले मिपला से दूर था । यह दूरी करीब उतनी ही थी जितनी कि उसके अपने गाँव से

ह स्कूल, जहाँ वह पढ़ने जाती । रास्ते में सोचने के लिए उसके पास ढेर वक्त नहीं होता ।

कारमेन दौड़ना चाहती । उसे लगता मानो हेक्टर को उसकी सख्त जरूरत थी । पर वह दौड़ नहीं पाती । रात भर सो नहीं पाई थी । और फिर खाने में एक स्लाइस मेनियक के अलावा कहाँ कुछ लिया था ? अचानक उसने महसूस किया कि हेक्टर उसे बुला रहा था ।

बेचारा छोटा हेक्टर । बड़ा होकर, क्या वह मुझे चाहेगा ? दोनों की जिंदगी के लिए पूरे दिन उसे अकेला छोड़ना मेरी मजबूरी ही तो है । शायद वह कोसे भी । मुझे भी पछतावा है कि मैंने उसे देखभाल के बिना इतनी देर छोड़ दिया । हाँ, मुझे गोरे लोगों की दवाई और उनकी साख में विश्वास है । लेकिन यदि माँ आज रात को ओझा के पास जाने के लिए कहती है, मैं मना नहीं कर पाऊँगी ।

और वह मैडम की कही बातों में खो गई । वे वाकई एक दूसरे को कभी नहीं समझेंगे । कारमेन अपने बच्चे की तुलना में मालकिन के साथ अधिक समय बिता चुकी थी । मैडम ने पूरे विश्वास के साथ अपनी बच्ची को कारमेन के जिम्मे लगा दिया था । फिर भी कारमेन मैडम की प्रतिक्रियाओं को नहीं जान पाई थी । कारमेन की दिमागी उथल-पुथल भी तो मैडम की कल्पना से परे थी । वह तो नौकरानी की दुनियादारी की दिक्कतों से बिलकुल बेखबर थी । कारमेन उसकी नजर में एक गैर-जिम्मेदार और अल्हड़ औरत थी ।

"पता नहीं कैसे उम्मीद करती है कि 5000 फ्रैंक प्रति माह में से कुछ बचत करूँ ? पिछले माह उन्होंने सिर्फ 4000 फ्रैंक दिए । विगत छह महीनों से वह 500 फ्रैंक प्रति माह काट लेती हैं ताकि मैंने जो घड़ी खरीदी उसकी कीमत चुकाई जा सके । यह मेरी एक मात्र फिजूलखर्ची थी । इसके बाद बिरादरी के टॉनटाइन में 1000 फ्रैंक, माँ को 1000 फ्रैंक और फिर महीने भर के लिए आई चाची एवं चचेरे भाई बहनों की तीमारदारी के लिए 1000 फ्रैंक । मेरे पास सिर्फ 1000 फ्रैंक बचे । और 1000 फ्रैंक की क्या कीमत ? मैडम खाने पर प्रतिदिन उतना खर्च देती हैं ।

सड़क की मद्धम रोशनी में गाड़ियाँ गुजरती रहीं । सामने से आनेवाली गाड़ियों की हेडलाइट उसकी आँखों को चुँधिया जाती । पीछे से आनेवाली गाड़ियों से टकराने से वह बाल-बाल बचती । पर कोई भी उसे लिफ्ट देने के लिए नहीं रुकता । हालाँकि वह भली-भाँति जानती थी कि उनमें कम से कम आधी गाड़ियों को उसकी तरह ही कोई काला चला रहा था । पर आज के दौर में, जिसकी जैसी मर्जी ।

ओह, काश, कल मैडम को दवा के लिए पैसा देना याद रहे ?

बीजा स्ट्रीट के नजदीक आते ही रात की शांति को चीरती महिलाओं के क्रंदन की आवाज उसके कानों में पड़ी ।

म्वाना मोनउ मे केकेंदा हे !

हेक्टर हे,

म्वाना मोनउ मे केकेंदा हे,

वह समझ गई । दवा... या ओझा... काफी देर हो चुकी थी ।

ओह, मेरा बेटा गुजर गया ! ओह, मेरा हेक्टर, ओह, मेरा बेटा गुजर गया ।

❑❑❑

बिहार का +2 स्तरीय हिंदी (कक्षा- XII) का नवीन पाठ्यक्रम

उद्देश्य

- किशोरावस्था से युवावस्था के संधिस्थल पर पहुँचे उन समस्त शिक्षार्थियों को विमर्श की एक ऐसी भाषा प्रदान करना है जिससे उनमें हिंदी की एक व्यापक समझ का क्रमिक विकास तो हो ही, अर्जित की जानेवाली भाषा के अभिव्यक्ति-कौशलों को पहचानते चलनेवाली शक्ति का भी विकास होता चले और वे उन भाषा-कौशलों का उत्तरोत्तर दक्षता के साथ अपने दैनंदिन जीवन में लिखित और वाचिक रूप में प्रयोग भी करते चलें ।
- इस स्तर पर शिक्षार्थी हिंदी भाषा और साहित्य का अध्ययन एक सर्जनात्मक, सांस्कृतिक प्रयुक्तियों के दृष्टिकोण से करते हुए हिंदी के निरंतर विकसित होते हुए अखिल भारतीय स्वरूप से भी अपना परिचय स्थापित करने में समर्थ हो सकें ।
- इस स्तर पर उनमें सर्जनात्मक साहित्य के प्रति रुझान उत्पन्न होगी तथा वे उसके अध्ययन में भरपूर आनंद उठाते हुए उसके गुण-दोषों की पहचान करते हुए स्वतंत्र रूप से उसके आलोचनात्मक आकलन में समर्थ हो सकेंगे ।
- यह बदलाव उनमें हिंदी साहित्य की विविध विधाओं, उनके महत्त्वपूर्ण रचनाकारों तथा शैलीगत विशेषताओं से परिचित करा सकेगा ।
- इस परिवर्तित पाठ्यक्रम से उनमें भाषा की सर्जनात्मक बारीकियों और उसके व्यावहारिक प्रयोग-वैविध्य की समझ उत्पन्न होगी जिससे वे विभिन्न ज्ञानानुशासनों में विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका का अनुभव कर सकेंगे ।
- इस पाठ्यक्रम के द्वारा वे विविध संचार-माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी की विविध विधाओं तथा उनकी प्रकृति से परिचित होते हुए उनमें नित्य-नूतन प्रयोगों के प्रति भी प्रेरित और प्रोत्साहित होते रहेंगे ।
- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य इस स्तर के कल्पनाशील शिक्षार्थियों की कल्पना-शक्ति को और भी उद्बुद्ध और सक्रिय करना तो है ही, इस दिशा में उनकी गति को उत्तरोत्तर दृढ़ से दृढ़तर करते हुए उन्हें इस योग्य बनाना भी है कि वे किसी रचना को व्यापक फलक पर रखकर उसकी प्रशंसनीय मूल्यांकन-क्षमता से संपन्न हो सके ।

शिक्षण-युक्तियाँ

- शिक्षार्थियों और शिक्षकों के बीच अबाध संवाद के लिए दबाव अथवा तनाव मुक्त वातावरण अपेक्षित है । अतएव शिक्षार्थियों को प्रश्न करने के लिए प्रोत्साहित करना एवं उनके प्रश्नों का समुचित उत्तर देना आवश्यक है । शिक्षण में जोर कंठस्थ कराने से अधिक पाठों की गहरी समझ तथा संबद्ध व्याकरण और रचना में पारंगति पर दिया जाना चाहिए ।
- उलझनों और शंकाओं का रचनात्मक समाधान करते हुए शिक्षार्थी को अधिक-से-अधिक बोलने और अपनी अभिव्यक्ति करने का अवसर दिया जाना चाहिए । उनके विचारों को महत्त्व देते हुए अध्यापक द्वारा शिक्षार्थी की राय अथवा विचारों को विश्वसनीय रूप से सहेजते हुए व्यवस्थित रूप में पुनर्प्रस्तुत किया जाना चाहिए ।
- शिक्षार्थी को भीड़ या नामहीन समूह के रूप में न देखकर व्यक्तिशः पहचानना और महत्त्व देना चाहिए । शिक्षकों को यह याद रखना चाहिए कि वे सिर्फ एक अध्यापक नहीं, बल्कि कक्षा में एक कुशल संयोजक भी हैं । शिक्षार्थी की टूटी-फूटी, खंडित या अधूरी अभिव्यक्तियों को उन्हें प्रोत्साहन देते हुए पूरा करना चाहिए और उन्हें आगे बढ़कर अधिक समग्रता में सोचने और व्यक्त कर सकने के लिए अवसर अथवा अवकाश देना चाहिए ।
- शिक्षार्थी को बिना उन्हें तनाव में डाले विषयों पर लिखकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए बढ़ावा देना चाहिए और उनके लिखे हुए को रुचिपूर्वक समुचित ध्यान देते हुए परखना तथा सँवारना चाहिए ।
- निर्धारित पाठ्य-पुस्तक से अलग हटकर विद्यालय के पुस्तकालय अथवा दूसरे स्रोतों से ऐसी पुस्तकें पढ़ने के लिए शिक्षार्थी को प्रोत्साहित करना चाहिए जो पठित विषयों और उनसे संबद्ध अन्य विषयों की आगे और विस्तृत जानकारी सुलभ कराती हों । इसके लिए पुस्तकों और उनके लेखकों के बारे में शिक्षार्थी को निरंतर बताते हुए उनके भीतर उत्कंठा जगानी चाहिए । कक्षा के अध्यापन के पूरक कार्य के रूप में, संगोष्ठी, अभ्यास, वर्ग, शिक्षार्थियों के बीच सामूहिक परिचर्चा, परियोजना-कार्य

और स्वाध्याय हेतु वाचनालय में बैठने के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। बीच-बीच में लेखक, समाजकर्मी या क्षेत्र-विशेष के विशिष्ट जनों को शिक्षार्थियों के बीच गोष्ठियों में आमंत्रित करने का आयोजन भी आवश्यक है।

पाठ्यपुस्तक का स्वरूप

इस वर्ग में 'दिगंत' (भाग - 2) नाम की एक पुस्तक है जिसमें 13 गद्य पाठ, 13 पद्य पाठ एवं 3 पाठ प्रतिपूर्ति के हैं। गद्य पाठों के चयन में हिंदी के गद्य-रूपों की विविधता, विकास-क्रम का ध्यान रखा गया है। पाठों के चयन में इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि छात्र अपनी साहित्यिक विरासत से परिचय प्राप्त करें और साथ ही आधुनिक दृष्टिकोण का भी विकास कर सकें। पद्य खंड में हिंदी के 13 कवियों की रचनाएँ हिंदी कविता के विकास-क्रम को ध्यान में रखकर दी गई हैं। यह विकास-क्रम प्राचीनता और आधुनिकता का संतुलित बोध कराता है। इन दो खंडों के अतिरिक्त इस पुस्तक में तीसरा खंड प्रतिपूर्ति का है जिसमें विश्व की तीन कहानियाँ शामिल की गई हैं। इस खंड को छात्र बिना बोझ के पढ़ सकेंगे।

गद्य खंड :

1.	बातचीत (निबंध)	बालकृष्ण भट्ट
2.	उसने कहा था (कहानी)	चंद्रधर शर्मा गुलेरी
3.	संपूर्ण क्रांति (भाषण)	जयप्रकाश नारायण
4.	अर्धनारीश्वर (निबंध)	रामधारी सिंह दिनकर
5.	रोज (कहानी)	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय
6.	एक लेख और एक पत्र	भगत सिंह
7.	ओ सदानीरा (यात्रा-वृत्त)	जगदीशचंद्र माथुर
8.	सिपाही की माँ (एकांकी)	मोहन राकेश
9.	प्रगीत और समाज (निबंध)	नामवर सिंह
10.	जूठन (दलित आत्मकथा)	ओमप्रकाश वाल्मीकि
11.	हँसते हुए मेरा अकेलापन (डायरी)	मलयज
12.	तिरिछ (कहानी)	उदय प्रकाश
13.	शिक्षा (शिक्षाशास्त्र)	जे० कृष्णमूर्ति

काव्यखंड :

1.	कड़बक	मलिक मुहम्मद जायसी
2.	पद	सूरदास
3.	पद	तुलसीदास
4.	छप्पय	नाभादास
5.	कवित्त	भूषण
6.	तुमुल कोलाहल कलह में	जयशंकर प्रसाद
7.	पुत्र-वियोग	सुभद्रा कुमारी चौहान
8.	उषा	शमशेर बहादुर सिंह
9.	जन-जन का चेहरा एक	गजानन माधव मुक्तिबोध
10.	अधिनायक	रघुवीर सहाय
11.	प्यारे नन्हें बेटे को	विनोद कुमार शुक्ल
12.	हार-जीत	अशोक वाजपेयी
13.	गाँव का घर	ज्ञानेंद्रपति

प्रतिपूर्ति :

1.	रस्सी का टुकड़ा	गाइ-डि मोपासाँ
2.	क्लर्क की मौत	अंतोन चेखव
3.	पेशगी	हेनरी लोपेज

इस वर्ग में 'व्याकरण, रचना और साहित्य-रूप' की एक स्वतंत्र पुस्तक है । इस पुस्तक को छात्र वर्ग - XI में ही देख चुके होंगे । लेकिन वर्ग XII के लिए व्याकरण के बिंदु निम्न प्रकार के हैं–संधि और उसके भेद, समास और उनके प्रकार, पदबंध, वाच्य और उनके भेद, वाक्य प्रकार, पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्द, संक्षेपण, मुहावरे और लोकोक्तियाँ, वाक्य संशोधन, उपसर्ग एवं प्रत्यय (संस्कृत, फारसी आदि विदेशी भाषाओं के हिंदी में प्रचलित प्रत्यय एवं उपसर्गों का अभ्यास भी आवश्यक है)। इसके अतिरिक्त निबंध, वार्ता, टिप्पणी, पत्र (अनेक रूप) आदि के लेखन से जुड़े अभ्यास वांछित होंगे । साहित्य रूप वाले खंड में आधुनिक कविता को समझने के लिए आवश्यक पारिभाषिक जानकारी दी गई है । बिंब, प्रतीक, रूपक, फंतासी, कल्पना और यथार्थ, मूर्तन एवं अमूर्तन आदि विषयक अवधारणाएँ सुगम रूप से समझाई गई हैं ।

इस वर्ग में भी पूरक पाठ्यपुस्तक के रूप में हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास है । इस पुस्तक को भी छात्र वर्ग–XI में देख चुके होंगे, किंतु छात्र वर्ग–XII में इस पुस्तक के उन अंशों को पढ़ेंगे जिनमें 19वीं शती से अब तक के हिंदी भाषा और साहित्य के विकासक्रम की निरंतरता का समुचित बोध कराया गया है ।

01384

BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना–1
मुद्रक: धनराज प्रिंटिंग प्रेस, कुनकुन सिंह लेन, पटना-4